ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

मीडिया और समाज

सारांश

बोलचाल में जनसंचार का अर्थ है, रेडियो, टेलीविजन, मुद्रित सामग्री और फिल्म जैसे साधन (प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) जिनका काम अधिक से अधिक लोगों तक सूचना पहुँचाना हैं। 'जन' शब्द का प्रयोग यहाँ किसी समुदाय, समूह अथवा देश में अधिकांश लोगों के अर्थ में किया गया है न कि किसी खास वर्ग या श्रेणी के लोगों के लिए। जन का यह अभिप्राय बताया हैं कि जनसंचार दूसरी तरह के संचारों से अलग है। क्योंकि यह कुछ व्यक्तियों, आबादी के किसी विशेष भाग को नहीं बल्कि आबादी के सभी भागों को सम्बोधित करता है। इसे जनसंचार इसलिए भी कहते है, क्योंकि इन माध्यमों से जनता के लिए एक साथ सूचनाएं प्रसारित होती है।

हाल में इस विषय की विवेचना में दो शब्द– जनसंचार (मास मीडिया) और जनसंवाद (मास कम्यूनिकेशन) का व्यवहार साथ–साथ हो रहा है। कुछ विद्वानों ने इन दोनों के बीच भेद भी किया है। जनसंवाद वह प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा सूचना काफी लोगों तक पहुँचाई जाती है, जबकी जनसंचार इन सूचनाओं के पहुँचाने का साधन है। संदेश और सूचना को भेजने वालों से श्रोताओं तक हस्तान्तरण की प्रक्रिया जनसंवाद के अन्तर्गत आती हैं। यह हस्तान्तरण जनसंचार की तकनीकी को यथा समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविजन कार्यक्रमों, फिल्मों, कम्प्यूटर नेटवर्क आदि के द्वारा होता है। सूचना भेजने वाले व्यक्ति किसी बड़े संचार संगठन अथवा सरकारी एजेन्सियों से जुड़ा हो सकता है। संदेश सार्वजनिक होते है और दर्शकों की संख्या बहुत ज्यादा होती है।

जयराम बैरवा
सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
राजगढ़, अलवर

मुख्य शब्द : मीडिया और समाज

प्रस्तावना

सार्वजनिक संदेश के उत्पादन और प्रसारण के संगठित स्वरूप को जन संचार कहा जाता है, जिसके अन्तर्गत टेलीविजन, रेडियो, फिल्म, समाचार पत्र, तथा पत्रिकाएं सम्मिलित हैं। संचार के इन साधनों को तीन प्रमुख श्रेणियों में विभक्त किया गया है।

1. मुद्रित संचार।
2. विद्युत संचार।
3. श्रृव्य–दृश्य संचार।

मुद्रित संचार के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएं शामिल है। विद्युत संचार में टेलीविजन और रेडियो दो मुख्य साधन है। श्रृव्य–दृश्य संचार में सबसे लोकप्रिय साधन का माध्यम फिल्में रही हैं।

हम लोग सूचना–क्रांति में रह रहे हैं। जितनी मात्रा में सूचनाएं उत्पन्न हो रही है उन पर सहसा विश्वास नहीं होता और वे स्वप्न से भी परे है। मूलतः यह सूचना प्रौद्योगिकीयों में क्रांति का परिणाम है। दूर संचार, टेलीविजन और कम्प्यूटर एक साथ मिल गये है। इन सभी प्रौद्योगिकीयों का योग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी कहलाता है। इसमें जनसामान्य के जीवन के विभिन्न पक्षों को परिवर्तित करने की भारी क्षमता है। ऐसी परिस्थिति में यदि लोगों के कल्याण के लिए सूचनाओं का इस्तेमाल होता है तब इनका प्रसारण आवश्यक है। सूचना प्रसारण का यह कार्य मीडिया द्वारा निष्पादित होता है।

मानव समाज में संचार तथा संचार के स्वरूपों की चर्चा बहुत पहले से होती रही हैं। समाजशास्त्रीयों ने संचार की अवधारणा को स्पष्ट करते हुये कहा है कि संचार संदेशों के माध्यम से की जाने वाली सामाजिक अन्तःक्रिया है। किसी भी संस्कृति में ये संदेश साझे महत्त्व के आधारों को प्रस्तुत करने के लिए प्रकटतः अथवा प्रतीकात्मक रूप में निर्मित होती है। मानवीय संचार सामाजिक अस्तित्व के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। यह वह प्रक्रिया हैं जो सूचनाओं (सांस्कृतिक विशेषताओं) को एक स्थान (व्यक्ति) से दूसरे स्थान (व्यक्ति) को पहुँचाती है। यह

कहा जा सकता है कि संचार प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक है। समाज में पारस्परिक सहमति/ सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने और उसको बनाये रखने के लिए संचार एक कुंजी है। मानवीय क्रिया–कलापों तथा सांस्कृतिक तत्वों को संयोजित करने में संचार प्रक्रियाओं की अपनी ही भूमिका हैं। संचार की सारी संरचना तीन इकाईयों से निर्मित होती है। स्रोत, संदेश, तथा लक्ष्य। स्रोत का अर्थ है– जहाँ से प्रेषित विचार जन्मा है। संदेश का अर्थ है, वह कथ्य या विचार सामग्री जो प्रेषित की गई और गन्तव्य का अर्थ है, वह व्यक्ति वह समूह जिसके लिए संदेश प्रेषित किया गया है। इस संरचना को निम्न चित्र से भी समझा जा सकता हैं।

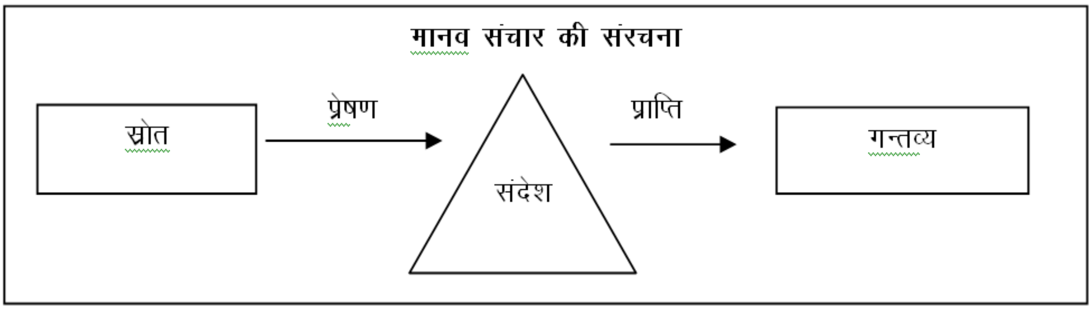

जनसंचार की समाजशास्त्रीय अवधारणा बहुत कुछ मानवीय संचार का एक विकसित स्वरूप ही हैं। **लारसन ऑटो एन.** के अनुसार जन संचार का अर्थ है–किसी अवैयक्तिक साधन से अपेक्षाकृत बहुत से जनों को एक ही समय में किसी सन्देश का प्रेषण। ये सभी अवैयक्तिक साधन मशीन से (प्रेस, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा) सीधे ही अपने श्रोताओं, पाठको और दर्शकों को अपना संदेश देते है। ये संदेश नियमित भी होते है और तात्कालिक भी। वेब्स्टर शब्दकोश के अनुसार संचार शब्द के दो प्रमुख अर्थ हैं (अ) प्रवाह करने की प्रक्रिया (ब) प्रवाह एवं आदान–प्रदान, सूचना, प्रतीक, चिह्न, शब्द भाषा, इशारों अर्थात् किसी भी आधार पर हो सकते हैं। समाज तथा व्यक्ति के व्यवहारों पर प्रभाव बहुत से कारकों में से ये भी एक है। जनसंचार के ये साधन उन लोगों के मूल्यों और मनोवृत्तियों पर प्रभाव डालते है, जो इनका प्रयोग करते है, पर दूसरी ओर जन के मूल्य व उनकी मनोवृत्तियॉ जन संचार के साधनों पर प्रभाव डालती है।

आदि काल से ही समाज की संरचना के लिए संचार की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यदि हम समाज को सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था के रूप में स्वीकार करें तो यह कहना पड़ेगा की बिना संचार के ये व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती है। सामाजिक सम्बन्ध और अन्तःक्रिया का महत्त्वूपर्ण तत्व सम्पर्क के बाद संचार हैं। मानव समाज में प्रतीकात्मक संचार होता हैं मानव के पास संस्कृति भी है। अतः भाषा व संकेतों के रूप में उसने अनेक प्रतीक बना रखे है। उन प्रतीकों की व्याख्या करनी होती है, तब उसका अर्थ समझ में आता है। मानव चिह्नों का प्रयोग अधिक नहीं करता अपितु संकेतों का प्रयोग करता है और हमने अन्तःक्रिया के लिए जिन भाषा, प्रतीक, चिह्न का संकेत या प्रयोग किया है, यही संचार है। समाजशास्त्र में मानव संचार तब ही हो सकता हैं जब वह अर्थपूर्ण हो। अर्थपूर्ण संचार तब ही हो सकता है जबकी (अ) अन्तःक्रिया करने वाले व्यक्ति एक दूसरे के प्रति जागरूक हो तथा (ब) वे एक दूसरे के द्वारा कही जाने वाली बात को समझ रहे हो। संचार की कुछ परिभाषाएं इस प्रकार है।

ए.एल. बरट्रेन्ड के अनुसार संचार किसी भी संस्कृति का केन्द्र है। विस्तृत अर्थो में संचार वह प्रक्रिया है। जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सूचना और सांस्कृतिक तत्व सम्प्रेषित किये जाते है। **जान्डेन** के अनुसार एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को सूचना, विचार और मनोवृत्ति प्रेषित करता है उसे ही संचार कहते हैं। **एलफ्रेड कुन** के अनुसार ''समाज की निरन्तरता मात्र प्रेषण पर आधारित नहीं है अपितु संचार की प्रक्रियायें हैं।'' जान्डेन के अनुसार संगठित स्रोत द्वारा विस्तृत, विजातीय, बिखरी हुई जनता को तकनीकी माध्यम से संदेश प्राप्त होते हैं, जनसंचार कहलाता है। डेविड बार्ले के अनुसार ''जनसंचार एक ही स्थान पर तैयार किए गए संचार के उस स्वरूप के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो बिखरे हुए विशाल समुदाय तक पहुँचने में समर्थ है।''

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता हैं कि संचार एक ऐसी प्रक्रिया हैं जिसके अन्तर्गत सूचना एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सम्प्रेषित की जाती है तथा यह गतिशीलता निरन्तर परिवर्तनशील प्रक्रिया है।

सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि जब किसी भाव या विचार या जानकारी को दूसरों तक पहॅुचाते है, और यह प्रक्रिया सामुहिक पैमाने पर होती है, तो यही जनसंचार हैं। जनसंचार का उद्देश्य जानकारी या विचारों को समाज के उन तमाम लोगों तक पहुँचाना है, जो इनसे सम्बन्ध रखते है अथवा जिनके लिए यह जानकारी पहुँचाना आवश्यक है। ताकि सभी लोग उस जानकारी से अवगत हो जाये। विचारों के आदान–प्रदान को सामुहिक प्रक्रिया जनसंचार कहलाती है। इसकी परिभाषाएं प्रस्तुत है–

लुण्डबर्ग, श्रेग, लारसन के अनुसार जनसंचार का सन्दर्भ तुलनात्मक दृष्टि से विस्तृत, बिखरे हुये, छिन्न–भिन्न समूहों को एक साथ प्रेषण करने से हैं। जिसका उद्देश्य उनमें प्रेरणा देना हैं। यह कार्य यह अवैयक्तिक साधनों द्वारा एक संगठित स्रोत द्वारा किया जाता है जिसके लिए गन्तव्य अज्ञात है। **लारसन ओटो एन.** के अनुसार जनसंचार बिखरे हुये जनों को उन प्रतीकों का प्रेषण है जो अवैयक्तिक साधनों से अज्ञात

गन्तव्य को भेजे जाते है। **राईट सी.आर.** के अनुसार जनसंचार विस्तृत विजातीय और अज्ञात संचार से अप्रत्यक्ष जुड़ा है।

उक्त परिभाषाओं आधार पर कहा जा सकता है कि–

1. जन संचार में अर्थ का संचार होता हैं।
2. सामाजिक मान्यताओं का संचरण होता है।
3. अनुभव बाँटना है। अतः संचार एक गतिशील प्रक्रिया हैं जो सम्बन्धों पर आधारित है। वह सम्बन्ध और व्यक्तियों को जोड़ने का एक बड़ा हथियार है। एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक व्यक्ति को एक समूह से, समूह से दूसरे समूह और एक देश से दूसरे देश को जोड़ने का काम भी जनसंचार के आधार पर ही होता है तथा इसी से समाज में विभिन्न प्रकार के बदलाव एवं विकास की प्रक्रिया देखी जा सकती है। एक रूप में हम कह सकते हैं की जनसंचार एक विशेष प्रकार का संचार है, जो यंत्रचालित हैं और संदेश को श्रोता, पाठक और दर्शक के पास दूर–दूर तक भेजता है। जनसंचार को उसकी विशेषताओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

जनसंचार की विशेषताएं

1. जनसंचार एक ही केन्द्र से तकनीकी साधनों द्वारा बहुत से लोगों को संदेश भेजने की संचार प्रकिया है।
2. जनसंचार वृहद् समाज की आवश्यकता है और बिखरे हुये समाज में सहमति तथा एकरूपता लाने का एक माध्यम है।
3. जनसंचार आमने–सामने का संचार नहीं है। अर्न्तवैयक्तिक संचार से भिन्न जनसंचार अप्रत्यक्ष सम्बन्ध श्रोता, पाठक और दर्शक से स्थापित करता है।
4. जनसंचार का स्रोत संगठन से जुड़ा है एवं विशेषज्ञ के प्रयत्नों एवं विशिष्ट ज्ञान से ही संदेश निर्माण होता है।
5. जनसंचार में विचारों का प्रवाह एक मार्गीय है। स्रोत द्वारा संदेश का प्रवाह तो होता है पर गन्तव्य से फीडबैक पूरा नहीं मिलता। फीडबैक मिलने अर्थात् प्रतिक्रिया शीघ्र प्राप्ति में समय लग जाता है।
6. जनसंचार करने का भी लक्ष्य और उद्देश्य होता है। उद्देश्य के बिना अर्थपूर्ण जनसंचार सम्भव नहीं होता है यह लक्ष्य असीमित होता है।
7. जनसंचार में गन्तव्य अज्ञात, अर्न्तवैयक्तिक विजातीय और विस्तृत है।
8. जनसंचार का प्रभाव अनुकूल और प्रतिकूल हो सकता है।
9. जनसंचार के संदेश का चयन गन्तव्य चयनित आधार पर करता है। अर्थात् श्रोत, पाठक, दर्शक, इच्छा और अनुरूपता के आधार पर संदेश से जुड़े होते है।
10. जनसंचार पूर्ण और अपूर्ण दोनों तरह का होता है।
11. जनसंचार अपनी जानकारी (संदेश) को जनसंचार साधनों (समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म) के माध्यम से वृहद् समाज में पहुॅचता है।

जनसंचार का महत्त्व

समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए समाज में जनसंचार व्यवस्था का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। समाज का सारा आधार व्यक्तियों के बीच क्रियाओं और अन्तःक्रियाओं पर केन्द्रीत हैं। इन क्रियाओं और अर्न्तक्रियाओं के लिए पारस्परिक अभिव्यक्तियॉ आवश्यक है। ये अभिव्यक्तियॉ तभी सम्भव है, जब विचारों का संचरण हो। सामाजिक क्रियाओं का मूल ही एक प्रकार से संचार है। समाज केवल संचार से चलता ही नहीं है अपितु स्वयं संचार में ही निहीत है।

जनसंचार आधुनिक जगत में सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण आधार है। जितनी तेजी से सूचनाएँ, ज्ञान और मनोरंजन के विविध स्वरूप विश्व के एक भाग से दूसरे भाग को हस्तान्तरित होते है, उससे सामाजिक संरचना पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। विश्व में घटित बहुत सी बातों में जनसंचार का प्रसार भी एक है। उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक आघात, पॉप संस्कृति आदि ऐसे कई शब्द है जो जनसंचार के प्रभावों से जुड़ गये है। स्वयं संचार साधन अपने आप में संगठन है और संगठन की संरचना तथा क्रिया स्वयं में एक समाजशास्त्रीय रूचि का प्रश्न है।

समाज में जनसंचार की आवश्यकता सदैव ही रहती है। समाज में जनसंचार के चार प्रमुख कार्य है।

परिवेश का निरीक्षण

समाज में निहित सामाजिक मूल्यों को प्रभावित करने वाले खतरों और अवसरों का पता लगाया जा सके।

सामाजिक घटकों में परस्पर सम्बन्ध स्थापना

समाज में जनसंचार विभिन्न घटकों के बीच परस्पर सम्बन्ध स्थापित करता है ताकि परिवेश के अनुसार जनसंचार के कारण सही प्रतिक्रिया हो सके तथा उसका पता लग सके।

सामाजिक विकास का अगली पीढ़ी में स्थानान्तरण

समाज के विकास में जनसंचार की विशेष भूमिका है। अतः उनका महत्त्वूपर्ण कार्य है कि सामाजिक विकास जो भी हुआ है, उसका अगली पीढ़ी में भी स्थानान्तरण हो, अन्यथा विकास की धारा अवरूद्ध हो जायेगी।

मनोरंजन

समाज में जनसंख्या का एक विशेष कार्य है कि वह समाज के लिए मनोरंजन का कारण उपस्थित करता है।

जनसंचार एक सहज प्रवृत्ति हैं। संचार ही जीवन है, संचार शून्यता ही मृत्यु है। आधुनिक जन– जीवन और सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था का ताना–बाना जनसंचार साधनों द्वारा सुव्यवस्थित है। वे ही जनता समाज के सजग प्रहरी है। संचार व्यवस्था समाज की प्रगति, सभ्यता और संस्कृति के विकास का माध्यम है। असभ्य को सभ्य, संकीर्ण को उदार तथा नर को नारायण बनाने की अभूतपर्व शक्ति संचार में ही निहित है। इसके बिना मानव गरिमा की कल्पना नहीं हो सकती। संचार ही तथ्यों और विचारधाराओं के विनियम का विस्तृत क्षेत्र हैं।

चिन्तन–मनन, कथन–श्रवण एवं आत्म–अभिव्यक्ति की क्षमता से सम्बन्धित संचार कला ने ही

मानव को सृष्टि में सर्वोच्च स्थान पर सुप्रतिष्ठित किया है। शिक्षा के प्रसार, जन–जागरण तथा जनसंचार के साधनों की उपलब्धता ने मानव को सक्षम बना दिया है कि अधिक से अधिक जानकारी रखें, हर विषय की गहराई में जाये। संचार–जगत में सन्तुलन और अंकुश न रहे तो वह अनियंत्रित हो जायेगा। विचारों की अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाना ठीक नहीं है, लेकिन उसे निरंकुश भी नहीं होना हैं। विचारों को नियम, औचित्य, मर्यादा देश हित और समाज हित से जुड़ा होना चाहिये। अभिव्यक्ति की आजादी का अर्थ स्वेच्छाचारिता नहीं है।आज जितना अधिक जानने की अदम्य इच्छा है उतनी ही जानकारी को छिपाने की भरपूर कोशिश भी। कानून सेन्सरशिप, प्रसारण और वितरण में अड़चन, संचार तंत्र की अर्थ व्यवस्था पर कुठाराघात इन सरकारी शास्त्रों से अभिव्यक्ति से स्वतन्त्रता बाधित होती है।

समाज में व्याप्त दोहरा जीवन, दोहरी नीतियॉं, ढोंग, अन्धविश्वासों, अन्धेरगर्दी, मदान्धता को मिटाने में जनसंचार साधन अहम भूमिका निभाते है। योग्यता और क्षमता के स्थान पर पैरवी और पैसा के प्रभाव को समाप्त कर नैतिक और बौद्धिक ईमानदारी का वातावरण इनसे ही निर्मित हो सकता है। जनसंचार मानव की प्रगति के प्रचार–प्रसार का प्रमुख माध्यम है। जो दानव को मानव बना सकता है।

जनसंचार माध्यमों की जिम्मेदारी है कि जनता उचित समय पर सही जानकारी प्राप्त करें, जनता अपने सतकर्त्तव्यों के महत्त्व और अपनी त्रुटियों के दुष्परिणामों से अवगत हो। शासन सुव्यवस्था और राष्ट्रीय हित के सम्पादन में जनसंचार माध्यम अविष्मरणीय भूमिका निर्वहन करते है। आम जनता की समस्याओं के निदान और उपचार की दिशा में जनसंचार प्रभावशाली सिद्ध होते है। आलोचना, विरोध, असहमति के प्रकाशन से रचनात्मक सुधार की ओर जनसंचार ही उन्मुख करता है। भ्रम, विभ्रम, अविश्वास, अन्धविश्वास, कुतर्क, विद्वेष को मिटाने में इसकी भूमिका प्रमुख है। विकासशील समाज और जागृत समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, प्रवृत्तियों के शोधन में जनसंचार का योगदान अविष्मरणीय है। संचार व जनसंचार के अभाव में व्यक्ति का समाज से सम्पर्क ही नहीं बन सकता, उसका जीवन अवरूद्ध हो जाता है, रिक्तता आ जाती है। समाज के विकास जन संचार की महत्ता सर्वमान्य है।

जनसंचार के माध्यम सभ्यता और संस्कृति के प्रहरी और पोषक है। इनकी उपयोगिता निम्नवत हैं–

सूचना

विश्व की घटनाओं, समाज की गतिविधियों और व्यक्ति के कृत्यों की सूचना को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य जनसंचार माध्यम है। जन सामान्य की समस्याओं को शासन तक तथा शासन की उपलब्धियों को जनता तक पहुँचा कर पारस्परिक सद्भाव जगाने का कार्य जनसंचार माध्यम का ही है। अद्यतन आविष्कारों, विकास सम्बन्धी सूचनाओं द्वारा जनसंचार के माध्यम पाठकों और श्रोताओं को प्रबुद्ध मानते है।

मनोरंजन

संचार के विविध माध्यम जनसामान्य का मनोरंजन और मानसिक उनन्यन करते है। सामाजिक तनाव, व्यक्ति द्वेष को मिटा कर 'सब जन हिताय' स्वस्थ मनोरंजन का प्रस्तुतीकरण जनसंचार माध्यमों द्वारा सम्भव है।

अन्तर सम्बन्धों की व्याख्या

सत्य और सामाजिक टिप्पणियों द्वारा जनसंचार के माध्यम से समाज के विविध घटकों में सौमनस्य पैदा करते है। समाजीकरण और प्रवृत्तियों के शोधन में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती हैं। जनता और सरकार राष्टहित में उत्तम निर्णय ले, ऐसी परिस्थितियॉं इसी के द्वारा उत्पन्न होती है।

गतिशीलता

राजनीतिक परिवर्तन, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक पुर्नरचना हेतु संचार माध्यम प्रभावकारी अभियान चलाते है।

निरन्तरता

प्राचीन और सामंजस्य उत्पन्न कर सामाजिक हितों जैसे एकता, साम्प्रदायिकता सौहार्द, जैसे तत्वों को प्रस्तुत कर जनसंचार माध्यम अपनी उपयोगिता सिद्ध करते है।

व्यक्तिगत स्तर पर ही जनसंचार माध्यम लाभ उपलब्ध कराने में पीछे नहीं रहे है।

तीसरी दुनिया के विकास रूझान निम्न बिन्दू के रूप में देखा जा सकता है। 1. आर्थिक और सामाजिक विकास के प्रति। 2. उत्पादकता में वृद्धि। 3. दोमार्गी सूचना प्रवाह।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कि संचार यांत्रिक होकर भी मानवीय जीवन का गतिवान और ज्ञान वर्द्धक साधन है, जो व्यक्ति से व्यक्ति और समाज तथा बहु समाजों को एक ही धरातल पर जोड़ता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जनसंचार सूचना या जानकारी जन माध्यम का उपयोग सामयिक तथा महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रचार–प्रसार करने के लिए किया जाता हैं। जिसका हमारे दैनिक जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। जनसंचार घटना का मूल्यांकन उचित परिप्रेक्ष्य में रख कर हमें विश्लेषण देता हैं। शैक्षणिक क्रिया सम्पन्न करने के लिए जनसंचार का उपयोग किया जाता है। सहमति के आधार पर समाज की व्यवस्था को बॉधने का प्रयास करता है। समाज द्वारा अपेक्षित व्यवहार करने की सीख देता है और परिवर्तित परिस्थितियों के नये स्वरूप से अवगत कराता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *लारसन, ऑटो, एन. ; सोशल इफेक्ट्स ऑफ मास कम्यूनिकेशन (संपा) हेण्ड बुक ऑफ मॉडर्न सोश्योलॉजी, रेड मेकाहाली, शिकागो, 1964,*
2. *राईट, सी.आर; मास कम्यूनिकेशन, ए सोश्योलॉजीकल प्रेस्पेक्टिव, रेण्डम हाउस, न्यूयॉर्क, 1963,*
3. *गोरे, एम.एस. (क्वोट) ; नेशनल ग्लोबल एण्ड मास मीडिया, मेन स्ट्रीम, ॲनुअल, 1985, पृ. 43.*

4. स्टेनबर्ग एण्ड चार्ल्स ; मास मीडिया एण्ड कम्यूनिकेशन, हास्टिंग हाउस पब्लिशर्स, न्यूयॉर्क, 1966,
5. पीटरसन, जैनसन एण्ड रिवर्स ; दी मास मीडिया एण्ड मॉडर्न सोसायटी, हाल्ट, रिनेहार्ट एण्ड विंटसन, इंस, न्यूयॉर्क, 1966,
6. केवल, जे. कुमार ; मास कम्यूनिकेशन इन इण्डिया, जायको पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे, 1999,